फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें—
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी,एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर **326** *1/—* *अगस्त* **2015**

गुणा होती प्रवृत्तियाँ

16 अप्रैल। सुबह 10 बजे। फैक्ट्री में दूसरे फ्लोर पर काम करते टेलरों ने काम बन्द कर दिया, नीचे उतरे, गार्डों को बाहर किया, और फैक्ट्री का दरवाजा बन्द किया। फैक्ट्री की पावर सप्लाई काट कर चारों मंजिलों पर काम रोक दिया। ***अगस्त*** में बैंक ने एक जूता फैक्ट्री पर ताला लगा कब्जा किया। कम्पनी के चेयरमैन और डायरेक्टर ने 100 वरकरों को ताला तोड़ कर फैक्ट्री में काम शुरू करने को कहा। मजदूरों ने इनकार कर दिया। एक सेक्युरिटी कम्पनी के गार्डों ने ***30 अगस्त*** से कम्पनी के मुख्यालय तथा जहाँ-जहाँ कम्पनी के गार्ड लगे थे — आस्ट्रेलियाई दूतावास, यू एन डी पी, यूनिसेफ और वर्ल्ड बैंक — के सामने धरना-प्रदर्शन किया। ***22 सितम्बर*** को, सुबह 8 बजे, प्लास्टिक इन्जेक्शन मोल्डिंग से वाहनों के पार्ट्स बनाती फैक्ट्री के वरकर फैक्ट्री के बाहर जमा हुये। दो अन्य ऑटो पार्ट्स बनाती फैक्ट्रियों के मजदूरों ने उनका समर्थन किया। एक बजे उन्होंने फैक्ट्री में काम आरम्भ किया। चार दिन बाद फिर काम रोक कर फैक्ट्री के बाहर एकत्र हुये। ***23 जनवरी*** की सुबह समूह में मजदूर एक से दूसरी फैक्ट्री गये। फैक्ट्रियों से मजदूर बाहर आने लगे। डायरेक्टरों के कार्यालयों में भी मजदूर गये और उन्हें बाहर निकलने को कहा। एक के बाद दूसरी फैक्ट्री बन्द होती गई। जब पुलिस आई तो मजदूर फैक्ट्रियों के अन्दर चले गये। पुलिस गई, तो बाहर आ गये।

सही समय पर साधारण-सी हँसी मजबूत से मजबूत किलों में दरारें डाल जाती है।

कई दोस्तों ने कई किस्से सुनाये। ***जनवरी-अन्त*** में पुणे की एक ऑटो फैक्ट्री की चार्जशीट घूम रही थी। उस में मैनेजमेन्ट ने वरकरों पर आरोप लगाये थे कि : ''तुम प्रोडक्शन लाइन पर हँस रहे थे, गा रहे थे, नाच रहे थे; अपनी मर्जी से लाइन पर स्थान बदल रहे थे; जब मन करे उत्पादन रोक रहे थे; और सुपरवाइजरों की सुन नहीं रहे थे। यह यूनियन और मैनेजमेन्ट के बीच हुये समझौते का उल्लंघन है।'' ***मार्च*** में एक और प्रवृति को सराहा जा रहा था : बांग्लादेश में गारमेन्ट वरकर अपनी मर्जी से, कभी भी, और बार-बार प्रोडक्शन रोक देते हैं; कई बार एक साथ पाँच-दस फैक्ट्रियों में कई दिन उत्पादन ठप्प रहता है। कोई लीडर नहीं होते, समझौता-वार्ता के लिये कोई नहीं होता। ***मई*** में सऊदी अरब में निर्माण क्षेत्र से तीन साल बाद लौटे एक मित्र से चाय पर चर्चा में उसने बताया : ''निर्माण स्थल पर हर वक्त खटपटें होती हैं। कभी वरकर और फोरमैन के बीच, तो कभी मैनेजर और इंजीनियर के साथ। अलग-अलग शहरों और देशों से आये मजदूर डोरमेट्रियों में साथ-साथ रहते हैं और खूब बातें होती हैं। कब, कहाँ, क्या हो जायेगा, यह अनिश्चित रहता है। मैनेजरों, इंजीनियरों, पुलिस के दबाव के बावजूद, साल में 6-8 बार, वरकर — कभी कुछ दिन, कभी पूरे महीने — डोरमेट्रियों से निकल काम पर जाने से इनकार कर देते हैं।''

हर किस्से से प्रवृत्तियाँ गुणा होती जा रही हैं। जगह-जगह जाते फैक्ट्री-द्रोहियों से जुड़ रहे हैं वे जो फैक्ट्री से निकलने से इनकार कर फैक्ट्री पर से मैनेजमेन्ट का कब्जा ढीला करते रहते हैं। उन से जुड़ जाते हैं शॉप-फ्लोर पर कोलाहल करने वाले। और उन से जुड़ जाते हैं वे जो डोरमेट्रियों से कार्यस्थलों के लिये निकलते ही नहीं।■

साथी चिन्तामणि

31 जुलाई को सवेरे साथी चिन्तामणि का निधन हो गया।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले की कादीपुर तहसील के गाँव मुस्तफाबाद सरैया में 1948 में साथी चिन्तामणि का जन्म हुआ। बारहवीं तक पढाई की। धर्म परिवर्तन के लिये लालच को ठुकराया। उत्तर प्रदेश सरकार के कृषि विभाग में कुर्की अमीन के पद पर लगे। नौकरी में वसूली के दौरान जाति के नाम पर अपमान करने वालों की पिटाई की और बदले से बचने के लिये स्थाई नौकरी छोड़ कर रिश्तेदार के पास फरीदाबाद पहुँचे। बाटा, एस्कोर्ट्स, डाबर, गुडईयर आदि-आदि में महीना-दो महीना नौकरी कर गेडोर फैक्ट्री में स्थाई मजदूर बने। नौकरी के संग-संग जाति की राजनिति की अम्बेडकरवादी धारा में सक्रिय रहे। पड़ोसी गाँव बबरीपुर के साथी विजय शंकर से लम्बी चर्चाओं ने मजदूर बनने, मजदूर होने की नई वास्तविकता पर साथी चिन्तामणि की मजबूत पकड़ बनाई।

1977 में फरीदाबाद में बहुत तीव्र हुई मजदूर हलचलों में साथी चिन्तामणि बहुत क्रियाशील रहे। उन्होंने उषा स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल तथा भारतीय इलेक्ट्रिक स्टील फैक्ट्रियों के जुझारु मजदूरों को विशेष सहयोग दिया। अस्सी यूनियनें छोड़ कर आये लोगों द्वारा बनाई मजदूर संघर्ष समिति में साथी चिन्तामणि भी थे। फरीदाबाद में 1979 में पुलिस फायरिंग में कई मजदूर मारे गये। दिल्ली फरीदाबाद टैक्सटाइल फैक्ट्री में आन्तरिक आपातकाल के बाद 1977 में हड़ताल में भूमिका के लिये साथी विजय शंकर नौकरी से निकाले गये। आजाद नगर झुग्गियों और मुजेसर में साथी विजय शंकर के साथ कार्ल मार्क्स की पुस्तक ''पूंजी'' के सामुहिक अध्ययन में बाटा, गेडोर, पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर, बिजली बोर्ड, हाण्डा स्टील, ईस्ट इंडिया कॉटन मिल, ओरियन्ट स्टील, लैदराइट आदि फैक्ट्रियों के मजदूरों के साथ साथी चिन्तामणि शामिल रहे।

1982 में फरीदाबाद मजदूर समाचार का प्रकाशन आरम्भ हुआ। अति सक्रिय मजदूरों की उस टोली में साथी चिन्तामणि शामिल थे जिनमें हर एक मजदूर समाचार की अन्य गतिविधियों में भाग लेने के संग-संग प्रति माह 25 रुपये और वार्षिक बोनस के समय 100 रुपये का योगदान देते थे। गेडोर फैक्ट्री में अन्य साथियों के संग साथी चिन्तामणि प्रतिदिन की गतिविधियों में क्रियाशील थे। यूनियन ने कम्पनी की मजदूरों की छँटनी करने की योजना में सक्रिय सहयोग दिया तब विरोध करने वालों में साथी चिन्तामणि थे और पिटाई झेली। अन्य हथकण्डों से पार नहीं पड़ी तब पुलिस की छत्रछाया में यूनियन और मैनेजमेन्ट ने प्लान्टों के अन्दर तथा ड्युटी आते-जाते मजदूरों से साल-भर मारपीट कर 1500 मजदूरों को नौकरी से निकाला। लड़ाकू यूनियन की छवि वाली सीटू फरीदाबाद में मर गई। ढाई वर्ष की अति सक्रियता के दौरान फैक्ट्रियों में मजदूरों के अनुभवों, विचारों, कदमों ने मजदूर समाचार के लेनिनवादी आधार को तहस-नहस कर दिया। मई 1984 के बाद प्रकाशन रोक दिया।

1986 में मजदूर समाचार की नई सीरीज का प्रकाशन आरम्भ हुआ। गेडोर फैक्ट्री में साथी चिन्तामणि बने रहे थे और कम्पनी द्वारा कई-कई महीने वेतन नहीं देने के दौरान खर्च चलाने के लिये रेहड़ी पर घूम-घूम कर कप-प्याली बेचे। मजदूर समाचार की एक-दो हजार प्रतियाँ प्रतिमाह का सिलसिला दिसम्बर 1993 में 5000 प्रतियाँ प्रकाशित करने के संग टूटा। फरीदाबाद में फैक्ट्रियों में मजदूरों की नये सिरे से बढती हलचलें 1992-2000 के दौरान हुये बड़े और बहुत महत्वपूर्ण परिवर्तनों का दूसरा पहलू थी। साथी चिन्तामणि की क्रियाशीलता भी बहुत बढी।

गेडोर-झालानी टूल्स कम्पनी में इस दौरान चीजें और भी अति में गई। प्लान्टों के अन्दर मारपीट, आधी-अधूरी तनखा, आठ महीनों की तनखायें बकाया, रंग-बिरंगे नेताओं को मजदूरों ने नकार दिया तब नियन्त्रण के लिये झटके में एकमुश्त जिन 100 मजदूरों को 1996 में नौकरी से निकाला गया उनमें साथी चिन्तामणि भी थे। गेडोर-झालानी टूल्स के मजदूरों की टोलियों ने जिला प्रशासन की नाक में दम किया और राज्य तथा केन्द्र सरकार के हर स्तर पर दस्तक दी लेकिन बकाया तनखायें बढती रही। दिल्ली में एक मित्र के संग साथी चिन्तामणि ने सुप्रीम कोर्ट के एक सीनियर एडवोकेट से राय ली तो उन्होंने कहा कि कम्पनी अगर तनखा नहीं दे तो कानूनी तरीकों से मजदूर तनखा नहीं प्राप्त कर सकते। यह एक फैक्ट्री के मजदूरों द्वारा गत्तों पर अपनी बातें लिख कर हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों के बीच जाने का प्रस्थान-बिन्दू बना।

गेडोर-झालानी टूल्स फैक्ट्रियों में 14 महीनों की तनखायें बकाया हो गई तब 15-20 की टोलियों में मजदूर गत्तों पर अपनी बातें लिख कर शिफ्ट-आरम्भ तथा शिफ्ट-छूटने के समय उन सड़कों पर खड़े होने लगे जहाँ से बड़ी सँख्या में मजदूर गुजरते हैं। करीब एक किलोमीटर तक एक के बाद दूसरे मजदूर द्वारा थमे गत्ते पढते जाते मजदूरों ने एक फैक्ट्री के मजदूरों के मामले को हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों का मामला बना दिया। साथी चिन्तामणि की इस में सक्रिय भूमिका थी। सड़कें बदलते और प्रतिदिन गत्ते थामे मजदूर फरीदाबाद में मजदूर-पक्ष को आकार देने लगे। सरकार हलचल में आई और चण्डीगढ में मीटिंगें कर तनखायें देने का सिलसिला आरम्भ करवाया तथा मजदूरों को नाथने के लिये नये सिरे से लीडर स्थापित करने की कसरतें की गई। अन्य साथियों के साथ साथी चिन्तामणि ने इन कसरतों को फेल कर दिया। गेडोर-झालानी टूल्स कम्पनी की 6 फैक्ट्रियाँ (तीन फरीदाबाद में और एक-एक कुण्डली, औरंगाबाद, जालना में) बन्द। मजदूरों के बीच तालमेल के लिये साथी चिन्तामणि महाराष्ट्र में जालना और औरंगाबाद गये।

कम्पनियाँ बन्द होने की स्थिति में बिचौलियों द्वारा एक ढर्रा स्थापित है। कानूनों के अनुसार मजदूरों का जो बनता है उसके दसवें हिस्से पर यूनियनें समझौता कर लेती हैं। गेडोर-झालानी टूल्स में अन्य साथियों के साथ साथी चिन्तामणि ने यह सिलसिला तोड़ दिया। अकेले-अकेले मजदूर की असहायता को भुनाते यूनियन नेताओं के खिलाफ सैंकड़ों मजदूरों ने बिना किन्ही प्रतिनिधियों अथवा नेताओं के, मिल कर कदम उठाये। हाई कोर्ट में वर्षों के लटकों-झटकों के बाद यूनियन लीडरों के फेर में रहे गेडोर-झालानी टूल्स मजदूरों को जहाँ 15 वर्ष बाद यूनियन द्वारा समझौते के तहत 15-25-30-40 हजार रुपये मिले (और इन पैसों के लिये यूनियन ने पाँच हजार रुपये पहले लिये) वहाँ मिल कर कदम उठाने वाले मजदूरों को डेढ-दो-ढाई-तीन लाख रुपये तय हुये और साथी चिन्तामणि इन मजदूरों में हैं।

1993 से 5000 प्रतियाँ प्रतिमाह फरीदाबाद में 12-14 स्थानों पर वितरण में साथी चिन्तामणि हर स्थान पर रहे हैं। सात हजार प्रतियाँ 2007 से छपने लगी तब फरीदाबाद के अलावा जब-तब साथी चिन्तामणि ओखला (दिल्ली) और उद्योग विहार (गुड़गाँव) भी पहुँचे। आई एम टी मानेसर के संग 8000, फिर 10,000, फिर 12,000 प्रतियों के वितरण में साथी चिन्तामणि सक्रिय रहे। कई फैक्ट्रियों के कई मजदूरों की बातें साथी चिन्तामणि के माध्यम से मजदूर समाचार

में छपी हैं।

इमरजैन्सी के दौरान 1976 में सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर झुग्गियाँ तोड़े जाने पर साथी चिन्तामणि झाड़सेंतली गाँव के पार बापू नगर में रहने लगे थे। ड्युटी के लिये रोज आठ किलोमीटर साइकिल से आना और आठ किलोमीटर वापस जाना के संग-संग सड़क पर मजदूर समाचार का वितरण करना तथा इस-उस फैक्ट्री के मजदूरों से यहाँ-वहाँ मिलने जाना साथी चिन्तामणि की दिनचर्या रही। बापू नगर से संजय कॉलोनी शिफ्ट करने के बाद मिलने-बात करने के लिये उन्होंने और ज्यादा साइकिल दौड़ाई। जुलाई 2013 से साथी चिन्तामणि का तन सड़क पर ढाई घण्टे खड़े हो कर मजदूर समाचार बाँटने में असमर्थ हो गया। लेकिन साथी चिन्तामणि ने साइकिल चलानी नहीं छोड़ी। आधा घण्टा साइकिल चला कर मजदूर लाइब्रेरी आना, चीजों को व्यवस्थित करना और 13,000 प्रतियों को 50-50 में गिन कर वितरण के लिये तैयार करना साथी चिन्तामणि का अभिन्न अंग बना। हर महीने डाक से 800 प्रतियाँ भेजने के लिये छाँटने, फोल्ड करने, पता चिपकाने, टिकट लगाने का कार्य साथी चिन्तामणि हर महीने, नियमित तौर पर, मृत्यु से पहले तक करते रहे।

साथी चिन्तामणि मजदूर समाचार का अभिन्न अंग हैं। साथी चिन्तामणि ने जीवन को पूरी क्षमता के साथ भरपूर जिया है। पिछले पाँच वर्ष की युवा वरकरों की हलचलों ने उन्हें अन्त तक जीवंत बनाये रखा। हम कह सकते हैं कि अतिम समय तक उनकी साँस उभरते समय के साथ चली।

असंगत बन गये है

कानूनों का उल्लंघन सामान्य बन गया है। कानूनों का पालन अपवाद बन गया है। कानूनों का कार्य नहीं कर पाना, कानूनों का नाकारा हो जाना, कानूनों का असंगत बन जाना एक लक्षण है। यह इस बात का लक्षण है कि जिन सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर कानून खड़े हैं वे सामाजिक सम्बन्ध कार्य नहीं कर पा रहे, वे सामाजिक सम्बन्ध नाकारा हो गये हैं, वे सामाजिक सम्बन्ध असंगत हो गये हैं। सामाजिक सम्बन्ध और उसके कानूनों का असंगत होना नये सामाजिक सम्बन्ध की आवश्यकता की अभिव्यक्ति भी है, नये सामाजिक गठन की पूर्ववेला भी है। ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, खरीद-बिक्री, हानि-लाभ, रुपये-पैसे, मजदूरी-प्रथा वाले सामाजिक सम्बन्ध की जगह क्या? विश्व के सात अरब लोगों में इस पर मन्थन हो रहा है। हमें लगता है कि फैक्ट्री मजदूरों की इस सामाजिक मंथन में उल्लेखनीय भूमिका है। इस सन्दर्भ में आदान-प्रदान बढाने में मजदूर समाचार योगदान देने के लिये फैक्ट्री मजदूरों की बातों को प्रकाशित करता है।

रेखा प्रिन्टर्स मजदूर : "सी-121 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में वार्षिक बोनस 20 प्रतिशत था, 17-18 हजार रुपये बनता था। पिछले वर्ष, 2014 में दिवाली पर कम्पनी ने अचानक 3495 रुपये बैंक खातों में भेज दिये। हम मजदूरों ने आपस में मीटिंगें की। फिर हम ने 4 दिन काम बन्द किया, फैक्ट्री में 8 घण्टे बैठ कर जाते। बैंक खातों में बोनस के तौर पर 3495 रुपये भेजने के 15 दिन बाद 15-15 हजार रुपये अतिरिक्त कम्पनी ने मजदूरों के बैंक खातों में भेजे।"

जी के एन ट्रान्समिशन श्रमिक : "प्लॉट 270 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 4 ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 300 मजदूरों की तनखा मई माह में 1700 रुपये बढाई। पे-स्लिप देते हैं और मई की पे-स्लिप में 1700 रुपये वेतन वृद्धि दर्ज है। इधर जून की तनखा दी तब उसमें से 1700 रुपये काट लिये — साहब बोले कि मई में तनखा गलती से बढा दी थी। जून माह की पे-स्लिप नहीं दी।"

चेसिस ब्रेक इन्टरनेशनल कामगार : "प्लॉट 9 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 250 मजदूरों को ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर 7200-8000-10,000 रुपये देते हैं। मध्य-जुलाई से आई टी आई तथा डिप्लोमा किये हों को ट्रेनी कह कर रख रहे हैं और उन्हें ई एस आई व पी एफ काट कर 6200 रुपये महीना दे रहे हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को निकालना शुरू कर दिया है। फैक्ट्री में 26 स्थाई मजदूर हैं।"

माईसन वरकर : "डी-12/3 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में कुशन की सिलाई करते कारीगर को 8 घण्टे के 330 रुपये देते थे। मई माह में हम ने दो दिन काम बन्द किया तब 8 घण्टे के 370 रुपये किये पर दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं दिया। फैक्ट्री में 150 मजदूर काम करते हैं पर ई एस आई तथा पी एफ 20 लोगों की ही हैं।"

सन्धार कम्पोनेन्ट्स मजदूर : "प्लॉट 24-25 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 150 स्थाई मजदूर और ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में मारुति सुजुकी कारों और होण्डा दुपहियों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को पे-स्लिप देते हैं और उस में 100 घण्टे ओवर टाइम को 50 घण्टे ओवर टाइम दर्ज कर भुगतान दुगुनी दर से दिखाते हैं। कैन्टीन में भोजन आमतौर पर खराब।"

कोनकोर्ड इलेक्ट्रिक इन्डस्ट्रीज श्रमिक : "47 डी एस आई डी सी शेड स्कीम 1, ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में ट्रान्सफार्मर बनाते मजदूरों को 20 प्रतिशत बोनस में 15,000 रुपये मिलते थे जिसे कम्पनी ने घटा कर 10,000 रुपये फिक्स कर दिया। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बोनस में 4000 रुपये देते हैं।" **(शेष पृष्ठ चार पर)**

रस्किन टाइटस

रस्किन टाइटस मजदूर : "प्लॉट 25-26 सैक्टर-2, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री नवम्बर 2013 में ग्रेटर नोएडा से यहाँ शिफ्ट की तब कम्पनी ने कहा था कि अप्रैल 2014 में 5000 रुपये बढायेंगे, नोएडा से बस लगायेंगे तथा बाकी नोएडा वाली बातें जारी रहेंगी। कम्पनी ने 1000-1000 करके दो किस्तों में मात्र 2000 रुपये बढाये और बस बन्द कर दी। नोएडा में 1000-1200 प्रतिमाह इन्सेन्टिव मिलता था वह बन्द कर दिया। नोएडा में सुबह 9 से रात 1 बजे तक काम करवाते तब सिंगल रेट से ही सही पर 12 घण्टे का ओवर टाइम देते थे और भोजन भी। यहाँ सुबह 9½ से रात सवा बजे तक रोकते तब 7 घण्टे का ही ओवर टाइम सिंगल रेट से देने लगे और भोजन देना बन्द कर दिया। मजदूरों ने बार-बार बातें उठाई और कम्पनी ने आश्वासनों में, होगा-होगा में पूरा 2014 वर्ष निकाल दिया।

" रस्किन टाइटस मैनेजमेन्ट ने अप्रैल 2015 में भी वेतन वृद्धि नहीं की। पच्चीस वर्ष सर्विस वाले मजदूरों की तनखा 13,000 रुपये। हलचलें बढने पर 24 मई को मैनेजमेन्ट ने दो वरकरों के बेंगलुरू ट्रान्सफर का आदेश जारी किया। नहीं गये। फैक्ट्री के अन्दर स्थाई तथा अस्थाई मजदूरों की हलचलें और तेज हुई। सब मजदूर 28 मई को सुबह 10 बजे कैन्टीन में बैठ गये। फैक्ट्री से बाहर किये गये। एक यूनियन का हस्तक्षेप। श्रम विभाग में 5 जून को समझौता, 6 को सब फैक्ट्री के अन्दर गये, दो को एक-दो दिन में लेने की बात। नहीं लिये और 2 जुलाई को कम्पनी ने 2 का हैदराबाद तथा 2 का मुंबई ट्रान्सफर का आदेश दिया। श्रम विभाग गये। कम्पनी ने 3 जुलाई को 8 को नौकरी से बरखास्त कर दिया। फैक्ट्री में 9 स्थाई मजदूर रह गये और वे भी 13 जुलाई को बाहर आ गये। ठेकेदारों के जरिये रखे कुछ मजदूर एकजुटता में 16 जुलाई को बाहर आ गये। श्रम विभाग में तारीख पर तारीख। न्यायालय ने 200 मीटर दूर का आदेश दिया और इधर मैनेजमेन्ट ने पुलिस के साथ दूरी नाप कर रॉकलैण्ड अस्पताल के पास किसी फैक्ट्री के सामने बैठने का स्थान दिखाया है। फैक्ट्री में 12 घण्टे की शिफ्ट में उत्पादन जारी है। कम्पनी, श्रम विभाग, पुलिस, और यूनियन थकाने की राह पर मजदूरों को धकेल रहे हैं।"

दिल्ली मैट्रो, वोल्टास, सैमसंग, ब्ल्यू स्टार, रिलायन्स आदि के लिये एयर कडीशनिंग में एयर डिस्ट्रीब्युशन पार्ट्स बनाती रस्किन टाइटस के मजदूर अपने प्रत्यक्ष अनुभव से और मुंजाल किरियु, ऑटोलिव, बैक्सटर, बजाज मोटर, अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स के मजदूरों के अनुभवों के दृष्टिगत गत्तों पर अपनी बातें लिख कर आई एम टी क्षेत्र की हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों के बीच जाने पर विचार कर रहे हैं।

भोले की फौज : रौद्र रूप में

शिवालिक प्रिन्ट्स लिमिटेड मजूदर : ''प्लॉट 231-232,सैक्टर-58, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 29 जुलाई को 1000 मजदूर सुबह 9 ½ बजे से गर्म पैन्ट बना रहे थे। कटिंग, सिलाई, सिलाई में मेजरमेन्ट तथा क्वालिटी चैकिंग, फिनिशिंग में धागा कटिंग, स्पॉटिंग, इनिशियल चैकिंग तथा पुनः मेजरमेन्ट चैकिंग, फाइनल चैकिंग, प्रेसिंग, हाफ फोल्ड, फुल फोल्ड, पन्नी पैकिंग, कारटन पैकिंग का सिलसिला जारी था। साँय 4 ½ बजे पन्नी पैकिंग से आवाज आई, 'पैन्ट का एक पैर बड़ा और एक पैर छोटा है !' क्वालिटी वाले भागे आये। पन्नी पैक किया माल खोल कर जाँचना शुरू किया। पाँच पैन्ट-दस पैन्ट-.... पचास पैन्ट में एक पैर बड़ा और एक पैर छोटा मिला। सब पैन्ट निर्यात के लिये थी। फोन। क्वालिटी मैनेजर दौड़ता आया। साहब ने फिनिशिंग में रखे 10 डिब्बे खुलवाये। एक डिब्बे में 4-5-6 गर्म पैन्ट और हर डिब्बे में 1-2-4 पैन्ट का एक पैर छोटा, एक पैर बड़ा मिला। चकराया साहब बायर हाउस (गोदाम) में पहुँचा जहाँ कन्टेनर में रखने के लिये पैन्टों से भरे डिब्बे रखे थे। कुछ डिब्बे खुलवाये..... एक पैर बड़ा और एक पैर छोटा वाली पैन्टें 600 हो गई तो साहब ने डिब्बे खुलवाना बन्द कर दिया। गड़बड़ी वाली पैन्टों को सिलाई-विलाई में नहीं भेजा। अगले दिन 30 जुलाई को उन 600 पैन्टों को पन्नी पैक करवा कर डिब्बों में भरा और शिपमेन्ट के लिये डिब्बे कन्टेनर में लाद दिये।

'' कल, 1 अगस्त को सुबह 9 ½ से एच एण्ड एम बायर की टी-शर्ट चल रही थी। एक फोल्डर ने 11 ½ बजे टी-शर्टों में उँगली साइज के छेद पाये.... 20 में से 7 में छेद मिले तो क्वालिटी वालों ने पूरे लॉट को, 500 टी-शर्ट को वापस फिनिशिंग में चैकिंग के लिये भेज दिया।

ऑफ सीजन में :

''शिवालिक प्रिन्ट्स फैक्ट्री में अन्दर जाने के समय निर्धारित हैं पर बाहर निकलने का समय शिपमेन्ट तय करती है — रात 8, रात 1, अगली सुबह 4 बजे। प्रोडक्शन टेलर पीस रेट पर हैं और सब को ठेकेदारों के खाते में रखा है। सैम्पलिंग, फिनिशिंग, पैकिंग वरकर कम्पनी के स्वयं के खाते में हैं। दो सौ मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में भी हैं पर सुबह 7 काम आरम्भ करने वालों को साँय 7 बजे रविवार को ही छोड़ते हैं, बाकी के 6 दिन आमतौर पर रात 1 बजे छोड़ते हैं, पर अगली सुबह 4 बजे तक भी रोक लेते हैं। महीने में 250-260-270 घण्टे ओवर टाइम काम, भुगतान सिंगल रेट से। और अभी तो ऑफ सीजन है, कम्पनी कहती है कि काम ही नहीं है। सीजन अगस्त से आरम्भ होगा...... यहाँ एच एण्ड एम, सीयर्स, जे सी पैनी का माल तैयार होता है। बायरों के प्रतिनिधि आते रहते हैं, कम्पनी पढाती है : 'कहना 8 घण्टे की ड्युटी है, ओवर टाइम महीने में 12-13 घण्टे तथा भुगतान दुगुनी दर से बताना !' मैनेजरों की 9 घण्टे और सुपरवाइजरों की 10 तथा 15 ½ घण्टे की ड्युटी हैं। एम्बुलैन्स नहीं है, बीमार होने पर साइकिल पर साथी मजदूर ले जाते हैं। फैक्ट्री में 16 से 21 घण्टे रोकते हैं तब कम्पनी रोटी के लिये 15 रुपये देती है......'' ■

✶ अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें।

✶ महीने में एक बार छापते हैं, 13,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।

19 जुलाई के पंजाब केसरी के फरीदाबाद-पलवल केसरी पृष्ठ में शीर्षक : '' श्रमिकों को निकालने के विरोध, कम्पनी पर पथराव''। उसी दिन के हिन्दुस्तान के फरीदाबाद लाइव के प्रथम पृष्ठ का एक शीर्षक : '' कर्मचारियों ने किया पथराव, कई वाहनों को तोड़ा।''

14 मील पत्थर, मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित ध्रुव ग्लोबल फैक्ट्री में 2000 स्त्री तथा पुरुष मजदूर पोलो राल्फ लोरेन, पी वी एच, नेक्स्ट, वॉल मार्ट के लिये सिलेसिलाये वस्त्र तैयार करते हैं। फैक्ट्री पर अपना कब्जा बनाये रखने के लिये मैनेजमेन्ट ने 16 जुलाई को दो मजदूरों को नौकरी से निकाला। शुक्रवार, 17 जुलाई को मजदूरों ने फैक्ट्री में काम बन्द रखा। ढीले होते कब्जे को सम्भालने के लिये शनिवार सुबह से ही कम्पनी ने फैक्ट्री पर पुलिस तैनात करवाई। बाउन्सरों के जरिये सुबह 9 बजे मजदूरों के फैक्ट्री में प्रवेश को मैनेजमेन्ट रोकने लगी : '' पहले हस्ताक्षर करो।''

स्त्री तथा पुरुष मजदूरों ने डायरेक्टर की एल्टिस गाड़ी समेत कम्पनी अधिकारियों की गाड़ियों पर पत्थरों से हस्ताक्षर किये। पत्थरों की चपेट में बाउन्सर-गार्ड और दो पुलिस वाले भी आये। कई थानों की पुलिस ध्रुव ग्लोबल फैक्ट्री बुलाई गई। आस-पास के इलाके पर कब्जा करने के लिये पुलिस ने ध्रुव ग्लोबल के स्त्री व पुरुष मजदूरों पर लाठियाँ चलाई। छह मजदूर घायल हुये। पुलिस ने 25 मजदूरों को गिरफ्तार किया। घबराई मैनेजमेन्ट पीछे हटी, नौकरी से निकाले दो मजदूरों को सोमवार, 20 जुलाई को ड्युटी पर लेने और गिरफ्तार मजदूरों पर से केस वापस लेने की बात।

असंगत बन गये है

(पृष्ठ तीन का शेष)

ए जी इन्डस्ट्रीज कामगार : '' प्लॉट 8 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में इंजेक्शन मोल्डिंग के 180 तथा पेन्ट शॉप के 180 मजदूर स्थाई हैं और उनकी 8-8 घण्टे की 3 शिफ्ट हैं। पाँच ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 450 मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और सप्ताह में बदलती हैं। शनिवार को साँय 7 बजे आरम्भ होती शिफ्ट रविवार को दोपहर बाद 1 बजे छूटती है। शनिवार को सुबह की शिफ्ट वाले रविवार को दोपहर 1 बजे काम आरम्भ करते हैं और सोमवार को सुबह 7 बजे छूटते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं होता, शिफ्ट बदलने के समय 18-18 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ हीरो दुपहियों के फाइबर के पार्ट्स बनते हैं। कैन्टीन में भोजन — आत्मा नहीं मानती।''

क ष्णा इम्ब्राइड्री वरकर : ''सी-62/2, सी-63, बी-75, एक्स-7 फेज-2 तथा सी-61 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देते। रोज 12 घण्टे पर 30-31 दिन के इम्ब्राइड्री ऑपरेटर को 9-10 हजार रुपये देते हैं। दिल्ली के श्रम मंत्री और श्रम विभाग में मजदूरों ने शिकायतें की हैं। महीने से ऊपर हो गया है.......'' *(हरियाणा सरकार ने 1जुलाई से देय डी ए की घोषणा अगस्त आरम्भ तक नहीं की है। दिल्ली सरकार ने भी अगस्त आरम्भ तक वेतन में कोई वृद्धि नहीं की है।)*

निमंत्रण

अगस्त में 30 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014

E-mail < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17